Navbharat Times, 28 January 2014

राज्य हमारा नियंत्रक नहीं व्यवस्थापक होना चाहिए

ओशो

दुनिया में राज्य जितना कम हो उतना अच्छा होगा। राज्य बिलकुल मिट जाएगा, ऐसा मैं नहीं सोचता। क्योंकि जहां एक से ज्यादा लोग हैं, वहां उनके संबंधों को तय करने के लिए कोई माध्यम चाहिए होगा, व्यवस्था चाहिए होगी। राज्य ऐसे ही होने चाहिए जैसे पोस्ट आफिस है, रेलवे है। राज्य व्यवस्थापक होना चाहिए, नियंत्रक नहीं। लोगों के जीवन में सुविधा आ सके, उसके लिए राज्य को फिक्र करनी चाहिए। उसे बाधा नहीं देनी चाहिए लोगों के जीवन में। बाधा तभी देनी चाहिए जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के जीवन में बाधा दे रहा हो।

राज्य बड़ा गौण होना चाहिए। जैसे कि तुम्हारे घर में रसोइया है, तो रसोइए की तुम पूजा करते हो कि फूलमाला पहनाते हो? अच्छा खाना बनाता है तो तुम उसकी प्रशंसा करते हो; बुरा खाना बनाता है तो तुम कहते हो कि यह गलत है। तुम्हारे खाद्यमंत्री की हैसियत भी राष्ट्र के रसोइए से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। राज्य की व्यवस्था पहरेदारी की होनी चाहिए। लेकिन राजनेताओं को सिर पर उठा कर चलने का कोई कारण नहीं है। राजनीति इतनी प्रमुख नहीं होनी चाहिए। जीवन में बड़ी बहुमूल्य चीजें हैं जो प्रमुख होनी चाहिए। राजनेता को सिर पर

लेकर तुम चलोगे, उससे राजनेता तो ऊंचा नहीं होगा, तुम नीचे होओगे। लेकिन अगर तुम किसी फकीर को कंधे पर उठा कर चले तो तुम ऊंचे हो जाओगे। उससे फकीर ऊंचा नहीं होगा, वह ऊंचा है ही।

व्यक्ति परम मूल्य है। राज्य व्यक्ति का सेवक है, मालिक नहीं। उससे ज्यादा उसका मूल्य नहीं होना चाहिए। अखबार राजनीति से ही नहीं भरे होने चाहिए। आखिरी पन्ने पर उनकी जगह होनी चाहिए। मगर वे पहले पन्ने को घेरे हुए हैं।

अखबार की सुर्खियों में थोड़ा सौंदर्य का बोध होना चाहिए। राजनीतिक नेताओं के चित्रों की बजाय तो किसी के बगीचे में गुलाब के अच्छे फूल खिले हों, उनके चित्र भी ज्यादा उपयोगी होंगे। सुबह उठ कर तुम अखबार पढ़ते हो। इससे तो अच्छा था, तुम कुरान ही पढ़ते, गीता ही पढ़ते। कम से कम कुरान की आयत की तरन्नुम तुम्हें घेर लेती। कम से कम गीता का शायद कोई स्वर तुम्हारे हृदय में घोसला बना लेता।

तुम सुबह उठे नहीं कि अखबार पढ़ते हो। राजनैतिक विक्षिप्त व्यक्ति तुम्हारे प्रतिमान हैं, तुम्हारे आदर्श हैं। इसे तो एक स्वप्न ही मानना चाहिए कि कभी ऐसा होगा कि राज्य की बिलकुल जरूरत न रह जाएगी। थोड़ी-बहुत जरूरत रहेगी। थोड़ी-बहुत तो जहर की भी जरूरत होती है; कभी-कभी औषधि के भी काम पड़ता है। उतनी ही जरूरत राज्य की होनी चाहिए।

(सौजन्य ओशो इंटरनैशनल फाउंडेशन)